आरएनआई नं. . RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. . RJ/UD/29-154/2021-2023

दैनिक समाचार–पत्र

प्रेषण :- कार्यालय चेतक सर्कल पोस्ट ऑफिस, उदयपुर
प्रेषण दिनांक: -प्रतिदिन

मन के जीते जीत सदा

• वर्ष - 10 • अंक-2577 • उदयपुर, शुक्रवार 14 जनवरी, 2022 • प्रेषण दिनांक : प्रतिदिन • कुल पृष्ठ : 4 • मूल्य : 1 रुपया

आपका अपना नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर

लुधियाना (पंजाब) में दिव्यांग जांच ऑपरेशन चयन तथा कृत्रिम अंग माप शिविर

नारायण सेवा संस्थान आप सभी की शुभकामनाओं व सहयोग से विश्वभर में दिव्यांग सहायता व सेवा के लिये जानी जा रही है। देश–विदेश में समय–समय पर शिविर लगाकर कृत्रिम अंगों का वितरण जारी है।

ऐसा ही एक कृत्रिम अंग वितरण शिविर 12 दिसम्बर 2021 को नारायण सेवा संस्थान की शाखा लुधियाना द्वारा में संपन्न हुआ। शिविर सहयोगकर्त्ता नारायण सेवा संस्थान उदयपुर द्वारा शिविर में 59 का रजिट्रेशन दिव्यांगों के लिये कृत्रिम अंग वितरण 46, कैलीपर्स वितरण 13 की सेवा हुई।

उक्त शिविर में मुख्य अतिथि श्री राजेन्द्र जी शर्मा (समाजसेवी), अध्यक्षता श्री बलविन्द्र सिंह जी (समाजसेवी), विशिष्ट अतिथि श्री डी.एल.गोयल सा., श्री रोहित जी शर्मा, श्री नवल जी शर्मा (समाजसेवी), शिविर टीम श्री अखिलेश जी (शिविर प्रभारी), श्री मधुसुदन जी (आश्रम प्रभारी, लुधियाना), श्री सुनिल जी श्रीवास्तव (सहायक), श्री भवरसिंह जी (टेक्नीशयन), श्री प्रवीण जी (विडियोग्राफर), श्री गोविन्द सिंह जी (टेक्नीशयन) ने भी सेवायें दी।

फिर जुड़ेंगे... बिखरे सपने

अनिल की जिंदगी में सबकुछ ठीक चल रहा था कि एक हादसे ने उसके सारे सपने बिखेर दिए। वह निर्माण कार्यो पर वेलदारी करके अपने वृद्ध पिता को परिवार पालन में मदद करता था। कभी–कभी कुदरत किसी के साथ ऐसा कर जाती है कि व्यक्ति टूट जाता है।

राजगढ़ (मध्यप्रदेश) निवासी किसान शिवनारायण वर्मा के पुत्र अनिल (23) के साथ ऐसा ही हुआ। एक साल पहले तक वह मजदूरी करते हुए जल्दी ही अपना घर–संसार बसाने का सपना देख रहा था। एक दिन अपने कार्यस्थल पर काम करते हुए अचानक करंट लगा और वो बेसुध होकर गिर पड़ा वहां मौजूद लोग व उनका भाई तत्काल निकटवर्ती जावरा के सिविल हॉस्पीटल लेकर पहुंचे। प्राथमिक उपचार के बाद हादसे की गंभीरता को देखते हुए उन्हें भोपाल के बड़े अस्पताल के लिए रैफर किया गया। जहां करीब दो महीने तक इलाज चला लेकिन दोनों हाथ और एक पैर को काटकर ही जिंदगी को बचाया जा सका।

यह स्थिति अनिल व उसके परिवार के लिए अत्यंत दु:खदायी थी। आत्मनिर्भर अनिल अब दूसरों के सहारे था। आंखों से हरदम आंसू टपकते थे। भविष्य अंधकार में था। इलाज के बाद घर लौटने पर पिता और माँ नवरंग बाई कितना ही दिलासा देते किंतु अनिल की आंखे शून्य में ही खोई रहती थी। करीब 10–11 महीने बाद वर्मा परिवार के किसी परिचित ने अनिल को कृत्रिम हाथ–पैर लगवाने की सलाह दी।

किंतु गरीबी आड़े आ रही थी। उसी व्यक्ति ने एक दिन फिर उसे अपनी बात याद दिलाते हुए उदयपुर के नारायण सेवा संस्थान जाने के लिए कहा। जहां नि:शुल्क आधुनिक तकनीक पर आधारित कृत्रिम अंग लगाए जाते हैं। अनिल अपने पिता के साथ 30 सितंबर को उदयपुर आए जहां करीब एक सप्ताह के आवास के दौरान उनके कृत्रिम अंग लगाए गए। जिनके सहारे अब वे उठते–बैठते और धीरे–धीरे चलते भी हैं। अनिल ने संस्थान से लौटते हुए कहा कि वह अपने बिखरे हुए सपनों को फिर से जोड़ने की कोशिश तो करेगा ही बुजुर्ग मां–बाप का सहारा भी बनेगा।

प्रसन्नता है प्रेम का झरना : कैलाश मानव

समता भाव में लाये। कैकेयी भी समता भाव में आयी लेकिन बहुत टाईम बाद। जब विधवा हो गयी, दशरथ जी के प्राण छूट गये। राम राम राम कहि राम राम। उसके बाद अक्ल आई तो क्या आई ? बाद में तो कहा था–राम, मैं तुझे लौटाने आई हूँ। मैंने ही तुम्हें कहा था चौदह साल का वनवास। मैं ही तुझे कहने आई हूँ ,अयोध्या लौट चलो। मोबाईल में कोई चीज डिलीट कर दी दी , तो पाछो जब तक लिखोगा नी और सेव नी करोगा। जब तक कई नी वेई सके। या छोटीक सीम है अतरी सी, पर सब कुछ या सीम हीज है – महाराज।

रहिमन धागा प्रेम का, मत तोड़ो छिटकाय।
टूटे से फिर ना जुड़े, जुड़े गांठ पड़ जाय।।

एक बार डिलीट कर दोगा पाछो जब तक मेमोरी में नी लाओगा। पाछो जब तक मालूम करके टेलीफोन नम्बर नी लिखोगा। और पाछो ओके रो बटन नी दबाओगा जब तक जुड़ नी सके। और कदी–कदी वेई जावे की माई, अब पछताए होत क्या। जब चिड़िया चुग गई खेत।

कोई न रहे अपाहिज और कोई ना रहे लाचार। नारायण सेवा संस्थान का ये सपना करो साकार। सब लोग मिल के आइये। हम लोग फिर से तन–मन–धन से इस संस्था का सहयोग करें। जय हो, जय हो धन्यवाद। आपने विकलांगों के हित में कुछ बोला, आपने उत्सव कर दिया। महाराज जैसे गुब्बारे, ये गुब्बारे तो निर्जीव है। बीस पैसे में मिल जाता है पण एक टाबर ने देई दो और टाबर राजी वेई जावे। और गुब्बारो आपाने यो भी केवे के–ऐ ऐ, यूं फूट जावे।

नर सेवा : नारायण सेवा

गोविन्दपुरा गाँव, जिला भिवानी हरियाणा से आये श्री सुरेश कुमार पिता श्री राम किशन, उम्र 25 वर्ष जन्म से ही पोलियो रूपी अभिशाप झेल रहे हैं। श्री सुरेश कुमार ने कक्षा चार तक अध्ययन किया है। पिता श्री राम किशन मध्यम आय वर्गीय कृषक हैं, जो बताते हैं कि सेवा सौभाग्य के माध्यम से नारायण सेवा संस्थान रूपी सेवा मंदिर की जानकारी मिली। आशा की किरण लिये संस्थान में आये और संस्थान के चिकित्सकों द्वारा जांच कर ऑपरेशन किया गया। वे बताते हैं कि मेरा यहाँ कोई पैसा खर्च नहीं हुआ। यह संस्थान पोलियो रूपी दानव को मारकर पुण्य का कार्य कर रही है।

राजकोट, गुजरात निवासी श्री प्रतीक सोनी पिता श्री सतीश सोनी उम्र 15 साल जो जन्म से ही मानसिक पक्षाघात के शिकार हैं। श्री प्रतीक सोनी ने कक्षा सात तक अध्ययन किया है। श्री सतीश सोनी का अपना सोने का व्यवसाय है वे बताते है कि– बम्बई, हैदराबाद जैसे कई महानगरों के चिकित्सालयों में इलाज कराया, परन्तु कोई सफलता नहीं मिल सकी। टी.वी. पर संस्थान की सेवाओं के बारे में जानकर उदयपुर आये और उसी दिन ऑपरेशन कर दिया गया। यहाँ के सेवा कार्य देखकर हर रोगी को परमानन्द मिल जाता है। संस्थान में सम्पूर्ण व्यवस्था निःशुल्क है।

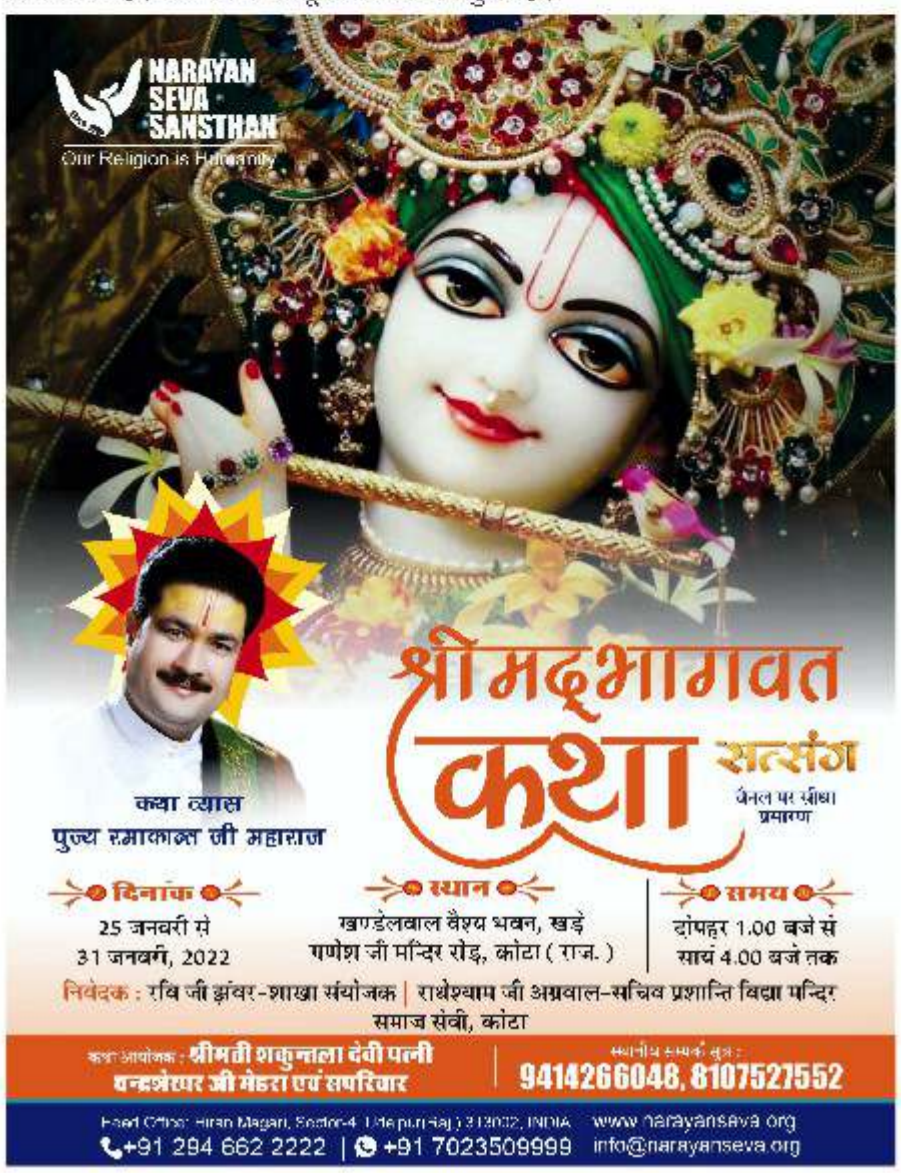

जीवन कैसे जिया जाय ?

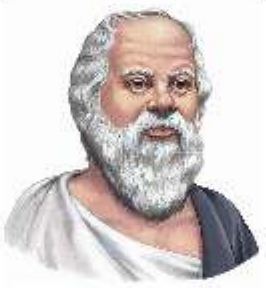

यूनान के प्रसिद्ध नागरिक व दार्शनिक सुकरात एक बार भ्रमण करते हुए एक शहर में पहुंचे। वहां उनकी एक वृद्ध व्यक्ति से भेंट हुई। दोनों काफी घुल–मिल गये। सुकरात ने उन वृद्ध महानुभाव के व्यक्तिगत जीवन में काफी रूचि ली, काफी खुलकर बातें की। सुकरात ने सन्तोष व्यक्त करते हुए कहा आपका विगत जीवन तो बड़े शानदार ढंग से बीता है, पर इस वृद्धावस्था में आपको कौन –कौन से पापड़ बेलने पड़ रहे हैं, यह तो बताइये? वृद्ध किंचित् मुसकराया– मैं अपना पारिवारिक उत्तरदायित्व अपने समर्थ पुत्रों को देकर (और उन सबको सर्व समार्थ्यवान प्रभु को समर्पित करके) निश्चित हूं। वे जो कहते, कर देता हूं जो खिलाते हैं, खा लेता हूं और अपने पौत्र–पौत्रियों के साथ खेलता हूं। बच्चे कभी भूल करते हैं, तब भी चुप रहता हूं। मैं उनके किसी भी कार्य में बाधक नहीं बनता। पर जब कभी वे परामर्श लेने आते हैं तो मैं अपने जीवन के अनुभवों को उनके सामने रखकर की हुई भूल से उत्पन्न दुष्परिणामों की ओर से सचेत कर देता हूं। वे मेरी सलाह पर कितना चलते हैं, वह देखना और अपना मस्तिष्क खराब करना मेरा काम नहीं है। वे मेरे निर्देशों पर चले ही, यह मेरा आग्रह नहीं। परामर्श देने के बाद भी यदि वे भूल करते हैं तो चिन्तित नहीं होता। उस पर भी वे पुनः उचित सलाह देकर उन्हें विदा करता हूं। वृद्ध की बात सुनकर सुकरात बहुत प्रसन्न हुए। उन्होंने कहा कि आपने इस आयु में जीवन कैसे जिया जाय, यह बखूबी समझ लिया है।

सम्पादकीय

विश्वास वह धागा है जो संबंधों को दृढ़ता से बाँधे रखता है। यह धागा मजबूत भी है तो कमजोर भी। मजबूत इस दृष्टि से कि आपसी विचारों का सेतु जब सुदृढ़ होता है तो परस्पर विश्वास भी स्वतः सुदृढ़ हो जाता है। जब धागा कमजोर होकर टूटने लगता है तो विश्वास भी डगमगाने लगता है।

विश्वास के लिये सम्पूर्ण सद्भाव आवश्यक है। यदि दो व्यक्तियों में से किसी एक के भी मन में संदेह का अंकुरण हो जाये तो विश्वास का धागा टूटने के कगार पर आ जाता है। यह संदेह क्यों पनपता है? कोई भी व्यक्ति आपसी संबंधों पर प्रतिकूल टिप्पणी करे तथा संबंध निर्वहन करने वाले उस पर भरोसा करके अपने अटूट विश्वास को शंका भरी दृष्टि से देखने लग जाये तो धागा कमजोर होगा ही।

विश्वास बना रहे, इसके लिये किसी तीसरे की उपस्थिति के बजाय दोनों का आपसी संवाद होते रहना आवश्यक है। यह विश्वास ही संबंधों का आधार है।

कुछ काव्यमय

विश्वास संबंधों का
वह सेतु है,
जिस पर चलकर
पार जाना निश्चित है।
बस पूरा-पूरा भरोसा
रखना है
बस इसी की कमी से
जमाना चिंतित है।

- वरदीचन्द राव

अपनों से अपनी बात

वाणी का सदुपयोग

परमात्मा ने देह देवालय दिया। परमात्मा ने हमें तंत्र दिये। श्वसन तंत्र, उत्सर्जन तंत्र, ब्रह्माजी की कृपा से जो सृष्टि बनी वो तंत्र, तंत्रिका तंत्र, परमात्मा ने हमें दिया पाचन तंत्र, कहीं खरीद के नहीं लाये महाराज कहीं बाजार में नहीं मिलता आपकी पूरी सम्पति लुटा दो तो भी ये मुख मण्डल तो ये मुखकमल नहीं मिल सकता। ये दो इंची की जिह्वा नहीं मिल सकती।

ऐसी वाणी बोलिये,
मन का आपा खोय।
औरन को शीतल करे,
आपहि शीतल होय।।

अपनी बोली से अहित मत करना, जैसे धनुष से छूटा हुआ तीर वापस नहीं आता बाबू! इसलिए तो मैं आपके पास आता हूँ। वाणी का सदुपयोग कीजिएगा।

भला करो पर बावरे,
तनिक ना करो बखान।
यदि कोई करदे भला तो,
कर उसका गुणगान ।।

ऐसा ही कीजिए, यदि कोई भला करे,

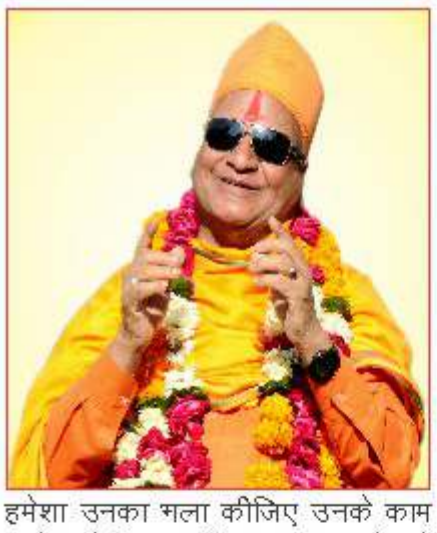

हमेशा उनका भला कीजिए उनके काम आये। जो गिर कर फिर सम्भल जाये, जो उदासी में भी प्रसन्न हो जाये। जो निराशा में आशा बना ले, जो किसी मित्र की मदद कर दे। जो परिवार से राजी-राजी रहे। जो परिवार में आनन्द फैला दे, उसे इंसान कहते न बाबू! ये तंत्र तो कामी, क्रोधी, लोभी के भी है। ये वीरप्पन के भी ऐसा ही पाचन तंत्र था। हां, वीरप्पन ने चन्दन की तस्करी करके दर्जनों लोगों को मार कर महापाप कर दिया। फिर गोलियों से छलनी हुआ। अभी हमारे बहुत प्रिय साधक है, देवेन्द्र भाई, किसी नालायक ने क्या कहे कुछ चोरी कर ली, बड़ी नालायकी की। देवेन्द्र उदास हो गया पर ज्ञानी है। उसने कहा गुरुजी कोई बात नही मैं पुनः तपस्या करूंगा। पर उस चोर ने अच्छा नहीं किया इसलिए तंत्र तो चोर के भी है। लेकिन आप साधु पुरुष हो, ये आपकी आदतें और उसकी आदतें भी बराबर है। पर इन आदतों की आप रक्षा करना क्योंकि इन आदतों के दाँत नहीं होते इसलिए भोजन सदा चबाइये। हाँ, दाँतों के द्वारा, शरीर का द्वारपाल दांत क्यों बैठता मुँह में, इसलिए बैठता वो मुझे लगा है, देह देवालय की रक्षा करनी चाहिए। मुझे लगा है प्रातः भ्रमण करना जरूरी कुछ योगासन कुछ प्राणायाम, ध्यान इन दिव्यांगों की सेवा ये अमरापुर से अमराराम बड़ी उम्मीदें लेकर आया है। ये 1100 बैड का हॉस्पीटल आपने बनवाया है। चैनराम जी लोढ़ा साहब आपके हमारे अपने सादा जीवन उच्च विचार वाले आपको भी वैसा ही बनना है। फिर मिलेंगे जरूर-2 हाजिर होंगे।

-कैलाश 'मानव'

व्यक्तित्व व व्यवहार

एक बहुत सुन्दर प्रसंग आता है, एक बार की बात है कि एक समृद्ध व्यापारी जो सदैव अपने गुरु से परामर्श लेकर कुछ न कुछ सुकर्म किया करता था। गुरु से बोला- गुरुदेव, धनार्जन हेतु मैं अपना गाँव पीछे जरूर छोड़ आया हूँ पर मुझे हर समय लगता रहता है कि वहाँ पर एक ऐसा देवालय बनाया जाये। जिसमें देव पूजन के साथ-साथ भोजन की भी व्यवस्था हो, अच्छे संस्कारों से लोगों को सुसंस्कृत किया जाये। अशरण को शरण में लें, वस्त्रहीन का तन ढकें, रोगियों को दवा और चिकित्सा मिले, बच्चे अपने धर्म के वास्तविक स्वरूप से अवगत हो सकें। सुनते ही गुरु प्रसन्नता पूर्वक बोले- केवल गाँव में ही क्यों? तुम ऐसा ही एक मंदिर अपने इस नगर में भी बनवाओ। व्यापारी को सुझाव पसंद आया और उसने दो मंदिर एक अपने गाँव और दूसरा अपने नगर में जहाँ वह अपने परिवार के साथ रहता था, बनवा दिया। दोनों देवालय शीघ्र ही लोगों की श्रद्धा का केन्द्र बन गये। लेकिन कुछ ही दिन बीते थे कि व्यापारी ने देखा कि नगर के लोग गाँव के मंदिर में आने लगे जबकि वहाँ पहुँचने का

रास्ता काफी कठिन है। उसे समझ में नहीं आ रहा था कि ऐसा क्यों हो रहा है। कुछ भारी मन से वह गुरुजी के पास गया और सारा वृतान्त सुनाया।

गुरुजी ने कुछ विचार किया और फिर उसे परामर्श दिया कि वो गाँव के मंदिर के पुजारी को नगर के मंदिर में सेवा के लिये बुला लें। उसने ऐसा ही किया। नगर के पुजारी को गाँव और गाँव के पुजारी को नगर में सेवा के लिये नियुक्त कर दिया। कुछ ही दिन बीते थे, यह देखकर स्तब्ध रह गया कि अब गाँव के लोग नगर की ओर रुख करने लगे हैं। अब तो उसे हैरानी के साथ-साथ परेशानी भी होने लगी। बिना एक क्षण के देरी किये वह गुरुजी के पास जाकर हाथ जोड़कर बोला- आपकी आज्ञानुसार मैंने दोनों पुजारियों का स्थानान्तरण कर दिया। लेकिन समस्या तो पहले से भी गंभीर हो चली है। अब तो मेरे गाँव के परिचित और परिजन कष्ट सहन कर और किराया भाड़ा खर्च करके नगर के देवालय में आने लगे हैं।

मुझसे यह सब देखा नहीं जाता। व्यापारी की बात सुनते ही सारी बात गुरुजी के समझ में आ गयी। बोले- हैरानी और परेशानी छोड़ो, दरअसल जो गाँव वाले पुजारी हैं उनका अच्छा स्वभाव ही है जो लोग उसी देवालय में जाना चाहते है जहाँ वे होते हैं। उनका लोगों से निःस्वार्थ प्रेम, उनके दुःख से दुःखी होना, उनके सुख में प्रसन्न होना, उनसे मित्रता का व्यवहार करना ही लोगों को आकर्षित करता है और लोग स्वतः ही उनकी ओर खींचे चले आते हैं। अब सारी बात व्यापारी के समझ में आ चुकी थी। हमें भी यह बात अच्छे से समझनी चाहिये कि हमारा व्यक्तित्व हमारे बाहरी रंग रूप से नहीं, हमारे व्यवहार से निर्धारित होता है।

- सेवक प्रशान्त भैया

एक सेवाभावी मानव की जीवनी

(वरिष्ठ पत्रकार श्री सुरेश जी गोयल द्वारा लिखित-झीनी-झीनी रोशनी से)

कैलाश, मानसरोवर की यात्रा सकुशल करने के बाद उदयपुर लौट गया। कुछ ही दिनों बाद गंगोत्री-यमुनोत्री की यात्रा करने का मन हुआ। टी. वी. पर कार्यक्रम का प्रसारण निरन्तर चल रहा था। कैलाश, मानसरोवर पर तो छोटा केमरा ले गया था मगर गंगोत्री-यमुनोत्री हेतु निकले तो पूरी केमरा टीम भी साथ ले ली। संस्थान की एम्बुलेन्स और जीप लेकर ऋषिकेश पहुंच गये। टी. वी. पर निरन्तर आते रहने के कारण कई लोग कैलाश को पहचानने लगे थे। जगह जगह लोग उसको नाम पुकार कर अभिवादन करते तो वह चौंक जाता कि यह व्यक्ति मुझे कैसे जानता है, फिर उससे पूछता तो पता चलता कि टी.वी. पर कार्यक्रम देखता है।

यात्रा के दौरान जगह जगह टी.वी. हेतु प्रवचन भी शूट किये जहां भी कोई सूरम्य प्राकृतिक स्थल नजर आता वहां आसन लगा कर बैठ जाता और प्रवचन की शूटिंग कर लेते। इस हेतु सारा सामान गाड़ियों में ही ले रखा था। ऋषिकेश से आगे बढ़े तो राह में एक व्यक्ति सड़क पर दंडवत हो आगे बढ़ रहा था। उसे देख कैलाश ने गाड़ी रूकवाई और नीचे उतरकर उसे प्रणाम किया। उससे पूछा कि यूं दंडवत कर कहां तक जा रहे हो, व्यक्ति ने बताया कि यमुनोत्री जा रहा हैं। वह आश्चर्य चकित रह गया, सोचने लगा-हम गाड़ियों में बैठे बैठे भी कष्ट की अनुभूति कर रहे हैं और यह व्यक्ति है जो ऐसी कठिन साधना कर आगे बढ़ रहा है।

कैलाश अपने साथ गाड़ियों में याचकों, वंचितों, श्रद्धालुओं के लिये पर्याप्त खाना लेकर चलता था। उसने इस व्यक्ति को भी खाना खिलाया और पूछा-आपको इस तरह यात्रा करते हुए कष्ट नहीं होता? वह बोला- श्रद्धावान लभयते ज्ञानम् -विश्वासम फलदायकम् अर्थात् विश्वास ही फल देता है- मुझे विश्वास है कि मेरा सारा काम यमुनोत्री माता करती है। उसकी इस बात पर कैलाश को भी चिन्तन मिला, वह सोचने लगा, हम अपने ईष्ट पर इतना विश्वास कहाँ कर पाते हैं।

अंग - 208

भगवान की कृपा

एक खास बात है कि सब अच्छे काम भगवान की कृपा से होते हैं। अच्छी बात मिलती है तो वह भी भगवान की कृपा से, अच्छे पुरुष मिलते हैं तो वह भी भगवान की कृपा से, अच्छी बुद्धि पैदा होती है तो वह भी भगवान की कृपा से, पारमार्थिक रुचि होती है तो वह भी भगवान की कृपा से, अच्छे के लिए परिवर्तन होता है तो वह भी भगवान की कृपा से!

सभी अच्छी बातों के मूल में परमात्मा ही हैं और सभी खराब बातों के मूल में हमारी कुबुद्धि, संसार की आसक्ति ही है। इसलिए हमारे को कोई अच्छी बात मिले, अच्छी सद्बुद्धि पैदा हो, अच्छे संत-महात्मा मिले, अच्छा संग मिले तो यह सब भगवान की कृपा है। भगवान की कृपा को स्वीकार करने से सब काम अपने आप ठीक होते हैं।

भगवान की कृपा की तरफ दृष्टि भी भगवान की कृपा से ही होती है! इसलिए मेरा सब को कहना है कि आप केवल भगवान की कृपा को मानें, किसी व्यक्ति को नहीं। व्यक्ति का संयोग भी भगवान की कृपा से ही होता है। मनुष्य शरीर भी भगवान कृपा करके देते हैं। 'भगवान की कृपा बिना हेतु होती है। जो हेतु से होती है, वह कृपा नहीं होती, उसमें पुण्य कारण होता है। हमारे किसी पुण्य से कृपा नहीं होती।' जो पुण्य से हो, उसमें कृपा क्या हुई? इसलिए मनुष्य शरीर में जो भी अच्छी बात होगी, कृपा से ही होगी, अपने पुरुषार्थ से नहीं।